निर्मला योग

द्विमासिक | वर्ष ४ अंक २१ | सितम्बर-अक्टूबर १९८५

ॐ त्वमेव साक्षात्, श्री कल्की साक्षात्, श्री सहस्रार स्वामिनी,
मोक्ष प्रदायिनी, माता जी, श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

"निर्मल धुन"

(तर्ज : रघुपति राघव राजा राम)

भज मन प्यारे मां का नाम,
भज मन प्यारे निर्मल नाम ।। भज मन ।।

माँ का नाम है प्रेम महान,
माँ का नाम है मोक्ष का ज्ञान ।
जन गण मंगल माँ का नाम,
सबको मिलता है वरदान ।। भज मन ।।

क्या गोरे हैं और क्या काले,
सब हैं उनकी गोद के पाले ।
क्या गरीब और क्या धनवान,
सारा जग उनकी सन्तान ।। भज मन ।।

न हिन्दू न मुसलिम जान,
न कोई सिख न क्रिस्तान ।
कोई नीच न कोई महान,
माँ का प्यार है एक समान ।। भज मन ।।

अपने तन को मंदिर जान,
तज दे रे मिथ्या अभिमान ।
हर प्राणी में माँ की जान,
इसी से होगा अब कल्यान ।। भज मन ।।

निर्मल नाम निर्मल नाम,
निर्मल निर्मल निर्मल नाम ।
निर्मल माँ का निर्मल नाम,
निर्मल निर्मल माँ का नाम ।। भज मन ।।

माँ का नाम माँ का नाम,
माँ का निर्मल निर्मल नाम ।
माँ का नाम निर्मल नाम,
सबसे प्यारा माँ का नाम ।। भज मन ।।

—रतन विश्वकर्मा

सम्पादकीय

"दुखिया मूवा दुःख कौ, सुखिया सुख कौ झूरि।
सदा अनंदी राम के, जिनि सुख दुःख मेल्हे दूरि ।।"

—श्री कबीर

मध्य मार्ग ही आनन्द का मार्ग है। अति चाहे जो भी हो वर्जित है। श्री कबीर दास जी कहते हैं कि दुःखिया भी मर रहा है और सुखिया भी मर रहा है, एक अत्यन्त दुःख से और दूसरा अत्यन्त सुख से।

राम के जन ही सदा आनन्द मनाते हैं जो सुख और दुःख दोनों से ही दूर रहते हैं। यह स्थिति निर्विचारिता में ही प्राप्त की जा सकती है।

ॐ त्वमेव साक्षात् निर्विचारिता साक्षात् श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देवी नमो नमः।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर. डी. कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : लोरी एवं कैरी हायनेक
1540, टेलर वे
वैस्ट वैन्कूवर, B.C. VIS 1N4

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पैट्रूनीया
२७०, जे स्ट्रीट, १/सी
ब्रुकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत श्री एम. बी. रत्नान्नवर
१३, मेरवान मैन्सन
गंजवाला लेन, बोरीवली
(पश्चिमी) बम्बई-४०००९२

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विस लि.,
१३४ ग्रेट पोर्टलैण्ड स्ट्रीट
लन्दन डब्लू. १ एन. ५ पी. एच.

इस अंक में .....

		पृष्ठ
१. सम्पादकीय	...	१
२. प्रतिनिधि	...	२
३. विश्व 'निर्मल' धर्म की स्थापना	...	३
४. देवताओं के विषय में प्राथमिक ज्ञान	...	६
५. कुण्डलिनी और श्री शिवशक्ति व श्री विष्णुशक्ति	...	१२
६. श्री गणपत्यथर्व शीर्षम्	...	२०
७. निर्मल धुन (आरती)	...	द्वितीय कवर
८. माता निर्मला महिमा	...	चतुर्थ कवर

विश्व 'निर्मल' धर्म की स्थापना

सहज मन्दिर, नई दिल्ली
२६-३-१९८५

आज आप लोग हमारा जन्म-दिवस मना रहे हैं। यह एक बड़ी सन्तोष की बात है क्योंकि इस कलियुग में कौन मां का birthday (जन्म दिन) इस उम्र में मनाता है। इसलिए यह द्योतक है कि आप लोग इस कलियुग में जन्म लेकर के भी अपने मातृधर्म से परिचित ही नहीं लेकिन उसका अवलम्बन भी करते हैं।

इस उम्र में तो जन्म दिन मनाना माने एक-एक साल घटता ही जा रहा है। और बहुत से काम करने के बचे हुए हैं। बहुत से अभी कार्य मुझे दिखाई दे रहे हैं जो कि अधूरे से हैं। उन पर मेहनत करनी होगी, ध्यान देना पड़ेगा, तभी वो पूरी तरह से होंगे।

दिल्ली में जो काम मैंने कल कहा था कि हमें अपनी सभ्यता की ओर ध्यान देना चाहिए। हमारी सांस्कृतिक स्थिति भी ठीक करनी चाहिए। और तीसरी बात जो बहुत महत्वपूर्ण है वो ये कि हमारी जो आत्मिक उन्नति है, उसकी ओर हमें ध्यान ही नहीं देना चाहिए, पर जैसे कोई एक शहीद सर पर कफन बाँध करके किसी कार्य में संलग्न होता है, उसी प्रकार हमें 'सरफरोशी की तमन्ना' ले करके सहजयोग करना चाहिये। जब तक हमारे अन्दर ये बात नहीं आती, तब तक सहजयोग सिर्फ हमारे ही लाभ के लिये है। इससे हमें क्या फायदे हुए, इससे हमने क्या-क्या सुख उठाया, यही सब मैं सुनती रहती हूँ। इससे हमारा जो कुछ भी लाभ हुआ है, जो भी हमारा अच्छा हुआ है, वो एक वजह से, एक कारण से हुआ है कि हमने अपनी आत्मा को प्राप्त कर लिया। लेकिन प्रकाश जब आपके अन्दर आ गया, जब आप दीप हो गए, तब दीप को आप कहीं छिपा के नहीं रख सकते। दीप को आपको उघाड़ कर रखना चाहिए। और सहजयोग, कितनी बार मैंने कहा कि, 'समाजोन्मुख' है, समाज की ओर उन्मुख है, वही सहजयोग है। जो प्रकाश फैलाता नहीं है ऐसे प्रकाश का कोई भी उपयोग नहीं। तो हर सहजयोगी को सोचना चाहिए कि मैंने कौन से दायरे में, कौन से अन्दाज से, सहजयोग फैलाया। पहले तो अपने व्यक्तित्व में विशेषता आ जाय, और उस विशेषता को पाने पर मैंने कितने व्यक्तियों को चमत्कृत किया।

आज कोई-सा भी कार्य आप हाथ में ले लीजिए, किसी भी देश में, तो पहला सवाल उठता है कि यहां के मानव की स्थिति क्या है? इनमें कौन-कौन से दोष हैं, इनकी कौन-सी conditionings (संस्कार, आदतें) हैं, इनके अन्दर कितना अहंकार है? उसका माप दंड देखा जाता है। और फिर सोचते हैं कि यह कार्य होगा या नहीं। सबसे बड़ा प्रश्न है मानव का। मानव की संख्या कितनी भी बड़ी हो लेकिन अगर उसकी स्थिति ठीक न हो तो कोई सा भी

कार्य ठीक से सम्पन्न हो नहीं सकता। यह सबसे बड़ा कार्य सहजयोग ने किया है कि इसने मानव में मनवन्तर कर दिया। मानव में इतना अन्तर ला दिया, इसमें इतनी विशेष प्रगति कर दी। आज सहजयोगी एक ईमानदार, सच्चे, मेहनती, ऐसे लोग तैयार हुए हैं जो इस देश में बहुत ही दुर्लभ हैं, बहुत दुर्लभ लोग हैं, जो कि जो बोलते हैं वैसा करते हैं, जो सोचते हैं वैसा ही जानते हैं, ऐसे दुर्लभ लोग सहजयोग ने तैयार कर दिये हैं। यह विचार से सहजयोग का बड़ा भारी आशीर्वाद इस देश पर है।

लेकिन अब भी ऐसे बढ़िया लोग अगर हो जायें अगर एक बढ़िया कारीगर हो और उसे कोई काम ही न हो तो उसकी कारीगरी बेकार जाती है। सो हरेक सहजयोगी को यही सोचना चाहिए कि मैं क्या कारीगरी कर सकता हूँ। पर वो भी अपने शरीर की तकलीफें, अपने आराम की बात पहले सोचता है। नहीं तो यह सोचता है कि किस तरह से इसमें कुछ रुपया लग जायेगा या थोड़ा-बहुत कुछ खर्चा हो जाएगा, तो ये कैसे हो ?

वास्तव में आनन्द को आप खरीद नहीं सकते, उसको सिर्फ भोग सकते हैं। लेकिन जिस चीज को हम प्राप्त करते हैं, जिसको हम लेते हैं, अपनाते हैं, अपने अन्दर उसका सुख उठाते हैं, वो चीज और है और सहजयोग चीज और है। इसमें जो आनन्द मिलता है, वो सिर्फ बांटने से ही मिलता है और कोई तरीका इसका नहीं है। उसके लिए हो सकता है कि आपको थोड़ी बहुत तकलीफें उठानी पड़ेंगी, थोड़ी बहुत परेशानियाँ उठानी पड़ेंगी, पर वो तकलीफ बिल्कुल नहीं रह जाती, क्योंकि आत्मा का सुख मिलता है। शरीर के सुख की ओर आप नहीं देखते।

आप अपने को आजमा (परख) कर देखिए कि जब आप अपने आत्मा को प्राप्त होते हैं, और आत्मा का प्रकाश जब आप दूसरों को देते हैं तो शरीर का सुख आपको महसूस ही नहीं होता। आपको तो आत्मा ही का आनन्द इतना ज्यादा मिलता है कि आप उस आत्मा के आनन्द में पूरी तरह से डूब जाते हैं। "आत्मनेव आत्मनः तुष्टः" आत्मा से ही आत्मा तुष्ट हो जाता है, उसको और कोई सन्तोष की जरूरत नहीं पड़ती। और कोई चीज में वो खोजता ही नहीं। इतनी इसमें तृप्ति हो जाती है, जिसको कि कहते हैं कि वो 'अमृतपान' कर लेता है। और अमृत पीने के बाद और कोई चीज पीने की जरूरत नहीं रह जाती। यह स्थिति जब आपकी आ जाय तब मानना चाहिये कि आप सहजयोगी हो गए हैं, नहीं तो आप अधूरे हैं।

अब आप जानते ही हैं कि हमारी तो उम्र काफी हो गई है और लगातार चौदह वर्ष से हमने मेहनत की है। पूरा तप पूरा हो गया कहना चाहिये। लेकिन ज्यादा १२ साल की मेहनत बहुत ज्यादा रही। और इसके बाद भी १२ साल और मेहनत करनी पड़ेगी, ऐसा लगता है। लेकिन आप लोग कितनी मेहनत करते रहे हैं वो देखना चाहिए। कोई न कोई बहाने जरूर आपका मन ढूंढेगा, कि यह नहीं हो सकता, इसमें मेरी family (परिवार) है मेरे बच्चे हैं, मेरा घर है, मेरा ये है, मेरा वो है।

लेकिन सब चीज से परे जो आनन्द की सृष्टि है उसको अगर पाना है तो आपको जान लेना चाहिए कि उस आत्मा की जो इच्छा है उसे पूरी करें। जब तक आप आत्मा की इच्छा को पूरी नहीं करियेगा आपकी बाकी सब इच्छाएं वैसी बनी रहेंगी, आपके सारे कार्य वैसे ही जमे रहेंगे। कुछ नहीं घटित होने का, क्षेम घटित हो नहीं सकता, योग जब तक पूरी तरह से नहीं होगा। लेकिन जैसे ही आपने योग को प्राप्त कर लिया और योग में आप स्थित हो गए, देखिये आपके सारे

प्रश्न एकदम से ही हल हो जाते हैं। आप लोगों के हुए हैं न प्रश्न हल कि नहीं ? सबके हुए हैं। तब फिर आगे बढ़ के देखिये कि जो हम सोचते हैं हमारे लिये प्रश्न हैं, जो हम सोचते हैं हमारे लिये बड़ी मुश्किलें हैं। आप यह सिर्फ सोच कर देखिये कि "नहीं, हम सहजयोग के कार्य में संलग्न हैं, और परमात्मा हमको देखने वाले हैं", आप देख लीजियेगा कि आपके सारे ही प्रश्न 'एक-साथ' साफ हो जाएंगे।

एक बार आपसे मैंने बताया था कि कुण्डलिनी जो है, वो कारण और परिणाम से परे, Cause and effect से परे रहती है। और जब आप कुण्डलिनी में जागृत हो जाते हैं तो उसका कारण भी मिट जाता है और परिणाम मिट ही जाएगा। जब Cause ही मिट गया तो उसका effect भी मिट ही जाएगा।

आपको इसके दर्शन होते हैं। काफी आप जानते हैं कि यह बात होती रहती है, और घटित हो रही है। जो कभी भी हम सोचते नहीं थे, ऐसी चीजें हमें मिल गईं, यह हमने प्राप्त कर लिया, इतना हमें सुख मिल गया, सब कुछ हमने पा लिया सहजयोग में, अब भी हम परेशान हैं, छोटी-छोटी चीजों के लिये, तो ये बड़ी मुश्किल हो जाएगी। क्योंकि अब तो कम से कम सोच लेना चाहिए कि हमने कितना इसमें सुख, कितना आराम, कितनी सुरक्षा पाई है और यही सहजयोग अब हम दूसरों को देते हैं, तो वो भी इसको पा सकते हैं। लेकिन जब हम दूसरों को देते हैं तो हम इसको बहुत अधिक पाते हैं।

हमारे लिये 'हजारों' परमात्मा के दूत लगे हुए हैं। न जाने करोड़ों के हाथ हैं, करोड़ों की शक्तियाँ हैं, सारी आपके पीछे लगी हुई हैं। एक आदमी खड़ा हो जाता है कि मुझे सहजयोग का कार्य करना है, न जाने कहाँ से चीजें जुटती जाएंगी, न जाने कहाँ से इन्तजामात होते जाएंगे, न जाने कैसे यह सब चीज होते जाएगा, हो जाएगा, सब कुछ।

देखिए, पहले आप पूरी तैयारी कर लें। क्योंकि आपमें जो देवता बैठे हैं, वो सब जानते हैं कि आप क्या हैं ? आप कितने सच्चे हैं कितने झूठे हैं ? आप अपने कितने ऊपर हैं, कितने नीचे हैं, सब चीज वो जानते हैं। और जब तक वो ये जानते हैं कि आप अभी पूरी तरह से संलग्न नहीं हैं तो आपकी मदद नहीं करते। लेकिन जैसे ही वो समझ जाते हैं कि नहीं यह सिर्फ अपने ही स्वार्थ और अपने ही लाभ के लिए नहीं आए हैं, लेकिन यह सहजयोग करने आए हैं, और सहजयोग जो कि समाजोन्मुख है, उसको बढ़ावा देने आए हैं तो आपको आश्चर्य होगा कि 'चारों तरफ' से वर्षा होती है आशीर्वाद की, चारों तरफ से जैसे सुगंधित वातावरण हो करके, आपको ऐसा लगता है हल्का-हल्का, जैसे "कुछ बोझा ही नहीं अब मेरे सर पर, सब काम हुए जा रहा है", और अपने आप सब सामान जुटते जाता है। उस स्थिति में हमें आना चाहिए। तब आप देखिए हर आदमी बहुत कार्य कर सकता है और बहुत बढ़ा सकता है।

मैं जानती हूँ कि अभी दिल्ली में काफी मेहनत हम लोगों को व्यक्तिगत भी करनी है। और फिर उसके बाद सामूहिक। और हो सकता है कि आप लोग सब अपने पड़ोसी, रिश्तेदार, सबसे इसकी बात कर सकते हैं, सबको बुला सकते हैं और कह सकते हैं।

हिन्दुस्तान में यह व्यवस्था बहुत अच्छी है कि हमारे बच्चे हैं, हमारे रिश्तेदार हैं, हमारे पहचान वाले हैं, सबसे हम यह बात कर सकते हैं। हो

सकता है उनमें से दो ही चार इसको मानें। लेकिन जब वो आपकी स्थिति को देखेंगे, जानेंगे कि आप में कितना फर्क आ गया है, तो वो जरूर प्रयत्नशील होंगे। कुछ तो होंगे ही। इस प्रकार आप सहजयोग को पूरी तरह से बढ़ावा दे सकते हैं।

हर इन्सान, वो चाहे स्त्री हो, पुरुष हो, या बच्चा हो, जब इस प्रकाश को प्राप्त करता है तो उसका 'अधिकार' है कि वह योग में स्थित हो। लेकिन उनका कर्तव्य है कि वह योग प्रदान करे।

आपके पास शक्ति है, आपके पास सब कुछ है, और तब भी अगर आपने योग प्रदान नहीं किया, तो यह कहाँ तक युक्ति संगत होगा, मैं यह नहीं कह सकती।

हमारे दिल्ली के Centre (केन्द्र) पर बहुत से प्रश्न ऐसे खड़े हुए हैं, जिनके बारे में मैं जरूर बात-चीत करूंगी और इन लोगों को बताऊंगी कि क्या प्रश्न हैं और किस तरह से उनका आप हल निकाल सकते हैं। वो मुश्किल काम नहीं। लेकिन जो हम मन से सोचते हैं, विचारते हैं, और जिन तर्कों को करके हम किसी एक इरादे पर पहुँच भी जाते हैं, तो भी हम जब तक पूरी तरह से अपने हंसा चक्र को जीत न लें, माने कि हमारे अन्दर जब तक discretion (विवेक) न आ जाए, जब तक हमारे अन्दर यह सुबुद्धि न आ जाए, जब तक हमारे अन्दर पूरी तरह से कोई चीज अच्छी है या बुरी है, कोई चीज सहजयोग के लिये लाभदायक है या नहीं है, यह समझने की सूक्ष्म बुद्धि हमारे अन्दर जब तक न आ जाए, समझ न आ जाए, तब तक सहजयोग आपने पाया नहीं।

और वो समझ कैसे आती है? कोई पूछता है, कैसे आती है? तुम्हें साइकल चलानी कैसे आती है? जब तुम चलाने लग जाओ। मोटर चलानी आती है? जब तुम चलाने लग जाओ। इसी प्रकार यह सूक्ष्म बुद्धि कब आती है? जब आती है आ जाती है।

कैसे आती है? सो तटस्थता से। आप साक्षी स्वरूप होकर हरेक चीज को देखना शुरू कर दें, ध्यान करें, और अपना समय ज्यादा सहजयोग के विचार में बिताएं, तो आ जाएगी। लेकिन कब आएगी, कैसे आएगी, यह तो जब होगा तभी होगा। और इसलिए वो चीज अभी तक अगर हमारे अन्दर नहीं आई है तो हमें उस ओर और अग्रसर होना चाहिए। इसलिए मैंने कहा कि अब जरा कोशिश जोरों से करनी चाहिये, बहुत जोरों में कोशिश करनी चाहिये।

मैंने इनसे कहा था कि पूजा में ऐसे लोगों को बुलाइये जो कि वास्तव में कुछ पा चुके हैं। और जो कोई पा सकता है, उसको देना आपका 'परम कर्तव्य' है। हर जन्म दिन के दिन कोई न कोई एक नया निश्चय करते हैं। और मेरी समझ में अब आ रहा है कि मुझे भी एक नया निश्चय कर लेना चाहिए। और नया निश्चय जो है कि वो "हमने जो विश्व धर्म बनाया है, जो हमने विश्व धर्म को स्थापना की है, जिसको हम मानते हैं, उसकी मर्यादाओं में जो नहीं रहता है, उसे सहजयोगी कहलाने का अधिकार नहीं, ऐसा मैंने सोचा है, कि एक नया निश्चय हम लोग करें। जो इसकी मर्यादाओं में रहता है वही इस धर्म का पालन करने वाला हो सकता है। जो विश्व धर्म को मानता है, वो अगर इसमें नहीं रहे तो उसको हम सहजयोगी मानने को तैयार नहीं। जैसे कि समझ लीजिए कि कोई सहजयोगी है, और वो dowry (दहेज) लेता है, तो वह सहजयोगी नहीं हो सकता। कोई है, वह जाति-पाति विचार रखता है, वो सहजयोगी नहीं हो सकता। कोई

ऊंच-नीच विचार रखता है, वह सहजयोगी नहीं हो सकता। तो आज मैंने यही निश्चय किया है कि आज से जो भी कोई इन्सान अपने को सहजयोगी कहलायेगा उसमें विश्व धर्म की पूरी कल्पना होनी चाहिए। इतना ही नहीं कि कल्पना में हो, लेकिन उसके आचरण और व्यवहार में अगर यह बात नहीं हो, समझ लीजिये कि किसी सहजयोगी ने ऐसी हरकत की, तो उसको सहजयोग में रहने का अधिकार नहीं है, उसको कहना चाहिये कि इसके लिये आप प्रायश्चित करें और प्रायश्चित स्वरूप पहले आप अपने को ठीक करें, और तभी आप सहजयोग में आ सकते हैं। ऐसा करने से संकीर्णता आ जाए, लोग कहें कि कम लोग हो गए, कोई हर्ज नहीं। भगवान के दरबार में भी बहुत कम जगह बची हुई है। आपको पता नहीं है। वहाँ कितने लोगों को आप घुसेड़ियेगा? नर्क में भी जगह नहीं रह गई! तो कहीं बीच में ही लटका कर लोगों को रखना पड़ेगा। इसलिए जो आधे-अधूरे लोग हैं, जो कहीं के न रहें, ऐसे लोगों को सहजयोग में नहीं आना चाहिए। बेकार में परेशान करने से कोई फायदा नहीं। जो लोग सहजयोग में आएं वो लोग सहजयोग की मर्यादाओं में रहें, उसको अपने आचरण में लाएं, उसको अपने व्यवहार में लाएं। अपने अड़ोसी-पड़ोसी सबको उसके बारे में पूरी तरह से बताएं, और यह कहें कि "हम विश्व धर्म में विश्वास करते हैं और हम किसी भी धर्म में विश्वास नहीं करते।" और जो लोग ऐसा नहीं कहते हैं, उनको हम सहजयोगी नहीं मानेंगे।" जो लोग डरते हैं समाज से यह कहने में कि हम विश्व धर्म के योगी हैं जो यह कहने में डरते हैं, कि हम सहजयोगी हैं ऐसे लोगों के लिए सहज-योग नहीं है। सहजयोग की मर्यादाएं बिल्कुल आपको पूरी तरह से माननी पड़ेंगी।

जैसे कि बहुत से लोग हैं, वो कहते हैं कि माँ हम थोड़ी-बहुत शराब-वराब पी लेते हैं, थोड़ी-बहुत सिगरेट भी पी लेते हैं, तम्बाकू भी खा लेते हैं, आप सहजयोगी नहीं हैं। जो सहजयोग की मर्यादाएं हैं उस मर्यादा में जो मनुष्य नहीं रहेगा, वो विश्व धर्म को नहीं मान सकता। और ये विश्व धर्म हमारा जो है, इसको पूरी तरह से स्वच्छ रखना है, क्योंकि यह सिर्फ 'विश्व धर्म' नहीं है यह 'विश्व निर्मल धर्म' है, इसमें कोई भी अशुद्ध बात हम आने नहीं दे सकते, इसलिए जो अशुद्ध है वो इसमें नहीं आ सकता। इसमें वही लोग रहेंगे जिन्होंने पूरी तरह से 'विश्व निर्मल धर्म' को माना, और उसकी तरह अपना आचरण किया। यही निश्चय आज हमने अपने जन्म दिन के दिन किया हुआ है, और आशा है आप लोग इसे प्रेम से स्वीकार करेंगे।

अब यह विश्व धर्म की क्या-क्या विशेषताएं हैं, और यह कैसा होना चाहिए, इसकी गहनता क्या है, इसके बारे में मैं किसी दिन और बताऊंगी, लेकिन अभी इतना जरूर जान लेना है कि मोटे तौर से जो बातें आप जानते हैं, वो कम से कम आप लोग नहीं कर सकते, जो बहुत ही साधारण तरीके से भी आप जो देख सकते हैं कि "यह चीज सहज नहीं" वो चीज आप नहीं कर सकते। और अगर आप उससे छुटकारा नहीं पा सकते तो हमें आप छुट्टी दीजिए। हम आप से जूझ नहीं सकते। बहुत से लोगों को हमने देखा है, बीमारी के लिए ठीक होने आएंगे, उसके बाद दूसरी फिर बीमारी ले आएंगे, फिर तीसरी बीमारी ले आएंगे। वजह ये है कि एक बार ठीक होने के बाद आपको सहज होना चाहिए। अगर आप सहज नहीं हुए तो फिर से आप असहज हो गए, तो फिर से आप बीमार हो जाते हैं। फिर आपको कोई बीमारी लग जाती है। फिर जिन्दगी भर हम आपको धोबी जैसे धोते ही रहें क्या?

तो आपको भी अपने को निर्मल रखना चाहिए,

और इस धर्म को इस तरह से मानना चाहिए कि "यह हमारा अलंकार है, यह हमारी शोभा है, यही हमारी विशेषता है। इसीलिए आज हम संसार में इतने ऊंचे स्थान पर बैठे हैं।" अंग-अंग में इसका विचार होना चाहिए। प्रत्यंग से vibrations (चैतन्य लहरियां) कहते हैं। यह समझ लेना चाहिए, कि परमात्मा इतने लालायित हैं आपको इससे सुशोभित करने के लिए। लेकिन आप कितने इसके प्रति जाकरूक हैं और आप इसके लिए सिद्ध हैं यह आपको खुद समझ लेना चाहिए। हमसे जितना हो सकता है आपसे बता देते हैं, और यही मापदंड चलेगा कि जब तक आप सहजयोग के धर्म का पालन नहीं करेंगे, तब तक आप सहजयोग में अन्दर आ नहीं सकते, आपको पूजा का अधिकार नहीं, किसी चीज का अधिकार नहीं रह जाता। और जो लोग इस मर्यादा में रहेंगे उनको ही यह अधिकार रहेगा। हो सकता है उसमें से चार-पाँच लोग ही रह जाएं, कोई हर्ज नहीं, आसानी रहेगी।

तो इसके प्रति अत्यन्त जागरूक रह करके आप लोग अपना व्यवहार, जीवन इस तरह से बनाएं कि आप सार्थ हों, आपका जो स्वयं है, उसका अर्थ निकले, सार्थ (अर्थ पूर्ण) हो जाएं। और उसी के साथ आप समर्थ हो जाएं। यही हमारा आपको आशीर्वाद है, कि सब लोग अपनी शक्ति में समर्थ हो करके इस प्रेम की शक्ति से सारे संसार को प्लावित करें।

आज क्योंकि हमारा जन्म दिन है बहुत लम्बी-चौड़ी पूजा नहीं होगी, एक साधारण पूजा होने वाली है। पहले तो गणेश जी के नाम से पैर धो करके उसका चरणामृत बनाया जाएगा। और उसके बाद में चरण धो करके उसका जिसे ये लोग 'तीर्थ' कहते हैं, वो बनाया जाएगा। और उसके बाद में हाथ से हम चरणामृत बना देंगे, और उस वक्त में १०८ नाम देवी के लिए जाएंगे। बस और कुछ ज्यादा पूजा नहीं है आज।

मेरा शरीर यहाँ होते हुए भी मैं सब जगह हूँ। यह अगर जानोगे तब ये भी समझना चाहिए कि, शरीर भी एक मिथ्या-दर्शन है। यह स्थिति आना बहुत कठिन है। परन्तु धीरे-धीरे आप अगर मिथ्या को जानोगे तो सत्य अपने आप ही मन में बसेगा और महाआनन्द की लहरें पूरे व्यक्तित्व को घेर लेंगी।

—श्री माताजी

❀ ❀ ❀

केवल ब्रह्मशक्ति सच्ची खुशी देने वाली व संतोष देने वाली चीज है। बाकी सब कुछ मिथ्या है। आप यही बात जीवन के हर क्षण याद रखिए तब सहजयोग आपकी समझ में आएगा।

—श्री माताजी

देवताओं के विषय में प्राथमिक ज्ञान

(१) एक कल्प (cosmic cycle, सृष्टि) के आरम्भ से पहले चरम तत्व (ultimate reality) एकमेव (undifferentiated) परब्रह्म के रूप में रहता है। जब कल्प के आरम्भ में यह एकमेव तत्व परब्रह्म से अंशों में विभाजित हो जाता है : (१) श्री सदाशिव, जो आदि पिता हैं और (२) श्री आदि शक्ति, जो आदि माता हैं। सदाशिव, सनातन (eternal) साक्षी है। उस पिता सदाशिव की कार्यशक्ति, जिसे (Holy Ghost) भी कहते है।

ॐ, प्रणव, अथवा आदि शब्द की शक्ति द्वारा आदि शक्ति तब सम्पूर्ण सृष्टि का सृजन करती है। ॐ उन तीन बीज शक्तियों का व्यक्त स्वरूप है जो सृष्टि की रचना करती है—'अ' इच्छा की बीज शक्ति, श्री महाकाली, 'उ' क्रिया की बीज शक्ति, महासरस्वती, 'म' उत्क्रान्ति की बीज शक्ति, श्री महालक्ष्मी।

ॐ दैवी सरल भाव (innocence) और पवित्रता के भावों का भी द्योतक है। जो तत्व ब्रह्माण्ड (cosmos) में सर्वव्याप्त हैं। बाद में यह (ॐ) हाथी के मुख वाले देवता, श्री गणेश के रूप में मूर्तिमान हुआ है।

(२) उसके बाद और हमारे इस भौतिक जगत की उत्पत्ति से पहले देव लोक का सृजन होता है। तीन प्रमुख देवता हैं : श्री शिव, श्री विष्णु और श्री ब्रह्मदेव। इन तीनों में से श्री शिव कभी अवतार नहीं लेते। वह विशुद्ध आध्यात्मिक स्थिति के प्रतीक हैं। उनकी पत्नी, (शक्ति) श्री पार्वती हैं। श्री विष्णु उत्क्रान्ति के सूत्रधार (guide) हैं। उत्क्रान्ति के आगामी सोपान का शिलान्यास करने के लिये वह अवतार ग्रहण करते हैं। उनकी पत्नी श्री लक्ष्मी सुख व समृद्धि की दासी हैं। जगत की उत्पत्ति करने वाले श्री ब्रह्मदेव बहुत कम अवतार लेते हैं। एक उदाहरण है, श्री हजरत अली। पैगम्बर मोहम्मद साहब के दामाद, उनकी पुत्री फातिमा के पति। श्री ब्रह्मदेव की पत्नी श्री सरस्वती सौन्दर्य, कला व संगीत की देवी हैं।

(३) एक अवतार पूर्णस्वरूप में अवतरित हो सकता है (अवतार) अथवा आंशिक रूप में (अंशावतार)। इनमें सबसे विख्यात और समय की दृष्टि से निकटतम श्री विष्णु के अवतार हैं श्री राम व श्री कृष्ण। अवतार चार श्रेणी के होते हैं : पिता, आदि गुरु, पुत्र और माता।

पिता स्वरूप :

श्री विष्णु लगभग ८,००० वर्ष पूर्व भारत में श्री राम के रूप में अवतरित हुए। श्री राम एक राजा के पुत्र थे और युवराज (राज सिंहासन के उत्तराधिकारी) की भांति उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई थी। वे उसी प्रकार के 'दार्शनिक राजा' थे जिस प्रकार का वर्णन प्लेटो ने अपने लेखों में किया था। वे एक अद्वितीय साहस, कौशल एवं शील से सम्पन्न योद्धा थे। अपने जीवन को उन्होंने एक मंच के रूप में प्रस्तुत किया जिस पर उन्होंने दिखाया कि एक अत्यन्त धर्मानुकूल जीवन किस प्रकार बिताया जा सकता है। श्री राम अपने जीवन द्वारा मानव सम्बन्धों में आदर्श आचरण का एक सम्पूर्ण नमूना प्रस्तुत करते हैं। क्या पुत्र, क्या पति, क्या भाई, क्या पिता और क्या राज, प्रत्येक क्षेत्र में उनका आचरण पूर्ण आदर्श था। वह दाहिने हृदय चक्र के देवता हैं और इस सूक्ष्म स्तर पर वह मानव में एक पिता, पुत्र, पति आदि के

लिये आवश्यक गुणों को जागृत करने की क्षमता को स्थापित करता है।

श्री विष्णु श्री कृष्ण के रूप में भी लगभग ६,००० वर्ष पूर्व भारत में ही अवतरित हुए। वह सर्व शक्तिमान परमेश्वर (विराट) श्री सर्वव्यापी महानता के द्योतक हैं। श्री कृष्ण की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वह योगेश्वर, अर्थात योग के अधिपति हैं, समस्त सांसारिक कर्तव्य बड़ी सफलता पूर्वक निभाते हुए भी सांसारिक आसक्तियों से पूर्ण अलिप्त। उन्होंने मानव चेतना को एक लीला (जगत को एक खेल अथवा क्रीड़ा या नाटक के मंच के रूप में देखना) के भाव से परिचित कराया। जिससे मानव अपने अहं भाव से उत्पन्न उनकी स्वकीय (निजी) इच्छाओं के कारण आने वाले हस्तक्षेपों से मुक्त होकर अपने निर्लिप्त कार्यों से उस परम अवचेतन का एक अनासक्त यन्त्र बन कर कार्य करता है। श्री कृष्ण का साक्षी भाव विशुद्धि चक्र में स्थित है। कुण्डलिनी शक्ति द्वारा इसे मानव में जागृत किया जा सकता है।

आदि गुरू स्वरूप :

श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु और श्री शिव के अबोधिता (Innocence) सम्मिलन से परमेश्वर के एक और स्वरूप श्री आदि गुरु का आविर्भाव होता है। वे श्री विष्णु को उनके उत्क्रान्ति कार्य में सहायता देने के लिये अनेक बार अवतरित होते हैं। श्री आदि गुरू स्वरूप के दस प्रमुख अवतरण हुए हैं: श्री अब्राहम, मूसा, कन्फ्यूशियस, जरातुस्त्रा, लाओं तू, सुकरात, राजा जनक, मोहम्मद, गुरू नानक, सिरडी के साई बाबा। (१९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में) श्री आदि गुरू स्वरूप हमारे सूक्ष्म शरीर उस क्षेत्र से सम्बन्धित हैं जिसे भवसागर कहते हैं। इन अवतरणों में मानव को वे सिद्धान्त प्रदान किये हैं जिनसे वह अपने दैनन्दिन जीवन में सन्तुलन बनाये रख सके और अतिशयताओं (extremes) से बच सके। जब कुण्डलिनी की ऊर्जा भवसागर के क्षेत्र को आलोकित करती है तब मनुष्य स्वयं अपना स्वामी (स्वयं अपना गुरू) बन जाता है।

पुत्र स्वरूप :

२००० वर्ष पूर्व श्री गणेश इजराईल में जीसस क्राइस्ट के रूप में अवतरित हुए। उनकी शक्ति मेरी मां है। श्री जीसस ने आज्ञा चक्र में क्षमा प्रदान करने, क्षमा प्राप्त करने, और पापों व कर्मों के फलों से मुक्ति पाने की क्षमता को प्रस्थापित किया। दिव्य शिशु 'जीसस' मानव शरीर में साक्षात ॐ (प्रणव) था। दिव्य शिशु (श्री गणेश) इस पृथ्वी पर अपने योद्धास्वरूप में भी श्री कार्तिकेय रूप में आया।

मातृ स्वरूप :

श्री आदि शक्ति महाजननी, जिसे ईसाई मत में Holy Ghost या Holy Spirit (पवित्र आत्मा) कहते हैं। वह भी अवतार ग्रहण करती हैं, कभी अपने निजी रूप में, जैसे १०,००० वर्ष पूर्व श्री दुर्गा के रूप में, अथवा अपने बहुमुखी स्वरूपों में से किसी एक स्वरूप में। वही इस सृष्टि रूप नाटक की सूत्रधार हैं। उदाहरणतः अपने मातृ स्वरूप में उन्होंने श्री क्राइस्ट की मां (मेरी) का अवतार लिया, राम अवतार के समय वे उनकी पत्नी बनकर आईं और श्री कृष्ण के समय राधा बनकर, आदि गुरु नानक के समय वह उनकी बहन नानकी बनकर आईं और आदि गुरु मोहम्मद साहब की पुत्री फातिमा बनकर आईं।

आज :

आदि शक्ति का चरम व सम्पूर्ण अवतरण

वर्तमान काल में इस पृथ्वी पर स्वर्ण युग का आरम्भ करने के लिये कार्य-रत है। इस अवतरण (जन्म) में उनका नाम है श्री माताजी निर्मलादेवी। श्री माता जी, जो समस्त देवताओं की विभिन्न शक्तियों की पुञ्ज हैं अपने मात्र प्रेम में उनके समस्त गुणों का एकीकरण करती हैं। श्री माता जी की शक्ति से मानव में समस्त देवताओं के गुण जागृत हो जाते हैं। उनमें सन्ताप हरने (comfort) मार्ग दर्शन करने (counsel) और उद्धार करने (redeem) की शक्तियां हैं।

(४) सारे देवता एक ही परमात्मा के विभिन्न पहलू हैं। वे भीतरी तन्त्र के किसी विशेष तत्व, कोई चक्र अथवा नाड़ी पर नियन्त्रण करते हैं। वे चिरकाल जीवन्त हैं और सहजयोग के महान कार्य में सहायता के लिये सदैव क्रियाशील रहते है। मन्त्रों की कला में प्रवीणता प्राप्त कर और विशेष कर, हृदय में श्रद्धा भाव को जागृत कर, सहजयोगी परमात्मा के इन सब पहलुओं के सम्पर्क में स्थित हो सकता है और सहायता और संरक्षण प्राप्त कर सकता है। अन्त में दैवी गुण प्रस्फुटित एवं विकसित होते हैं और चक्रों में प्रकट होते हैं।

(५) देवता मानव के अतिरिक्त इतर अस्तित्वों के एक विस्तीर्ण क्षेत्र पर शासन करते हैं :

सत् (goodness) के क्षेत्र में देव गण होते हैं जो प्रकृति की शक्तियों पर नियन्त्रण करते हैं : इन्द्र (वर्षा), वायु, (हवा, पवन) अग्नि, भूमि (पृथ्वी), वरुण (समुद्र) इत्यादि। इन देवताओं से सम्पूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर व्यक्ति अन्त में पंच महाभूतों पर नियन्त्रण कर सकता है। देव लोक का देवता (Celestial beings) भी होते हैं; जैसे फरिस्ते (Archangels), श्री हनुमान (Gabriel), श्री भैरव (Michael)।

असत् (evil) के क्षेत्र में भी विभिन्न श्रेणियों के दुष्ट (satan) आत्माएं होती हैं। ये शक्तियां मानव को उसकी आध्यात्मिक परिणति (ऊंचाइयाँ) प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न करने में प्रयत्नशील रहती हैं। जब श्री माता जी १९७२ में अमरीका गई थीं तब उन्होंने इन दुष्ट शक्तियों के नाम, जो आज मानव शरीर में विद्यमान हैं। बताए थे। और मानव के आध्यात्मिक कलेवर (सन्तान) को वह जो हानि पहुँचा सकते हैं उसके प्रति सावधान किया था। अपने पिछले अवतरणों में उन्होंने उनका संहार कर दिया था और अब फिर नष्ट कर दिया जायगा। इस अवधि में हमारे लिये हितकर है कि हम उनके आगमन का लाभ उठायें और आत्म साक्षात्कार के द्वारा आध्यात्मिक प्राणी बन जायं।

जय श्री माता जी।

पार होने के बाद आपको ये मालूम होना चाहिए कि हमारे स्वभाव में क्या क्या दोष है। हमारा स्वभाव ही हमारी शक्ति है। जब आप अपने आत्मा के, मतलब अपने स्वयं के, बन जाओगे तब तो वहाँ पर सुन्दरता ही नजर आएगी और बाहर की दुनिया नाटक नजर आएगी।

—श्री माताजी

कुण्डलिनी और श्री शिवशक्ति व श्री विष्णुशक्ति*

अमर हिन्द मण्डल,
बम्बई
२४ सितम्बर, १९७९

जब तक शिवशक्ति का मेल जीव से नहीं होता तब तक योग घटित नहीं होता है। यह मेल जब घटित होता है तब योग घटित होता है। शिव अलिप्त भाव से हृदय में 'क्षेत्रज्ञ' की तरह रहता है। मतलब (क्षेत्र+ज्ञ) क्षेत्र को जानने वाला। हमारे अन्दर ऐसा कोई है जो हम जो कुछ कर रहे हैं उसे जानता है। हम ये जानते हैं कि, अगर हमने अपने आपको ठगने का प्रयास किया और अपने साथ प्रतारणा की तो अपने हृदय में कोई बैठा है जो यह जानता है। वह जाननेवाला जो है वह 'शिव' है। वह अपने हृदय में आत्मास्वरूप बैठा हुआ है। जब तक शिवशक्ति और आत्मा का योग घटित नहीं होता तब तक ये दोनों शक्तियाँ अलग समझनी चाहिए। आत्मा की जो शक्ति है वह साक्षीस्वरूप, चिन्मय है। वह अनन्त है। वह कभी भी दूषित नहीं हो सकती। उसे आप कभी भी मार नहीं सकते। आत्मा निर्लेप है, वह किसी से भी लिप्त नहीं होती। वह अलग है और सब कुछ देखती रहती है।

मैं उदाहरण के तौर पर बताती हूँ। गैस लाईट (जिसमें बाहर कांच की चिमनी होती है) के भीतर छोटी-सी ज्योति जलती है, एक छोटी-सी ज्योति होती है। वैसे ही अपने हृदय में एक ज्योति है। वह आत्मा है। वह बदिस्त (भीतर स्थित) ज्योति, जो जागृत है, ज्योतिर्मय है, वह आत्मा है। बाकी सुप्तावस्था में है, अर्थात जिसमें जागृति नहीं है। जागृति का अर्थ है, हमारा जो जागतिक स्वभाव है या जो सामूहिक चेतना है, उसे प्राप्त होना। जिसे 'अलख' कहते हैं या जो 'परोक्ष' है वह हमारे चित्त में जागृत होता है, उसे ही जागृति कहते हैं। मैंने ऊपर कहा है गैस लाईट के भीतर एक छोटी-सी ज्योति जलती है और उससे एक गैस लाईट का बड़ा प्रकाश मिलता है तब वह गैस एक बड़ी प्रज्ज्वलित गैस लाईट बनती है। उसी तरह इस योग का है। लेकिन ये जो गैस पाईपों से बह रही है उसे हम सुप्त कहेंगे। क्योंकि वह अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है। इसलिए सुप्त है। प्रज्ज्वलित केवल वह छोटी-सी ज्योत है। हमारे हृदय में आत्मास्वरूप वह जागृत है, बाकी सुप्तावस्था में है। कुण्डलिनी जो हमारे अन्दर बैठी हुई है वह शिवशक्ति है। महाकाली की शुद्ध शक्ति हमारी कुण्डलिनी में बैठी रहती है। इच्छा हमने प्रयोग में नहीं लायी है। वह शुद्ध स्वरूप है। वह कुण्डलिनी में बैठी रहती है। जब ये किसी संयोग से या संकल्प से जागृत होती है तब वह ऊपर उठकर सदाशिव के स्थान पर जाकर मिलती है। तब हृदय में बैठी हुई आत्मा को एक चिनगारी मिलती है और उसी चिनगारी से यह शक्ति प्रज्ज्वलित होती है।

*मराठी प्रवचन का हिन्दी अनुवाद।

वसे तो शिवशक्ति आत्मा की शक्ति नहीं है परन्तु है भी। शुरू में आपने देखा होगा कि परमात्मा और उनकी शक्ति एक ही है। सूर्य और उसकी किरणें एक ही हैं। चाँद और चाँद की किरणें एक ही हैं। ये दो नहीं हैं। उसी प्रकार परमात्मा और उनकी शक्ति दो नहीं हैं। परन्तु मनुष्य प्राणी के समझ में नहीं आता कि दो चीजें एकाकार हैं पर वे दोनों एक-दूसरे से अलग हैं। क्योंकि, उनमें सृजन घटित हो रहा है। अगर वह परमेश्वर में समायी रहेगी तो कुछ भी सृजन नहीं हो सकता। जब 'पूर्णब्रह्म' स्थापित होता है तब सारी सृजन-क्रिया घटित होती है। इसी शिवशक्ति से एकाकार कुण्डलिनी पहले घटित होती है। उसके बाद शिवशक्ति से ही क्रियाशक्ति निकलती है। क्रियाशक्ति और शिवशक्ति के मिलने से विष्णु-शक्ति निकलती है। विष्णुशक्ति ज्ञानशक्ति है। मतलब जो हमारे संवेदना (चेतना) में आया उसे ज्ञान कह सकते हैं। पुस्तकी ज्ञान को ज्ञान नहीं समझते। जब मनुष्य परमात्मा की खोज में भटकता है तब कहना चाहिए कि उसका विष्णुतत्व पूर्ण रूप से जागृत हुआ है। अगर ये विष्णुतत्व उसमें जागृत नहीं हुआ तो सहजयोग थोड़ा निम्नस्तर का होता है।

यह विष्णुशक्ति सभी के पेट में स्थित है। विष्णुशक्ति से धारण होता है। हम लोगों में धर्म के बारे में बहुत विकृत कल्पनाएं हैं। लेकिन धर्म वैसा न होकर अत्यन्त शाश्वत व सनातन है। यह 'कल्पनाएं' नहीं हैं, यह 'वास्तविकता' है। मतलब कार्बन में अगर चार अणुभार हैं तो सारे कार्बन में चार ही अणुभार होंगे। अगर सोने का रंग पीला है और वह खराब नहीं होता तो वह सोने का धर्म है। प्रत्येक चीज जो अपना-अपना धर्म मिला हुआ है—(बिच्छू-सांप)। वह विष्णुशक्ति है। ये धर्म प्रगत (उत्क्रान्त) होकर आज मानव स्थिति तक आया है। मानव के दस धर्म हैं। ये दस धर्म मनुष्य में होने ही चाहिएं। वे अगर नहीं हैं तो वह व्यक्ति मनुष्य धर्म से च्युत है अर्थात वह मनुष्य नहीं। या तो वह राक्षस बनता है, नहीं तो जानवर बनता है। मानव रहने के लिए वे दस धर्म पेट में स्थित रहते हैं। यह बिल्कुल सच बात है। अब इन दस धर्मों की रक्षा करने के लिए परमेश्वर ने एक दूसरी व्यवस्था मनुष्य में बना रखी है। यह मनुष्य नहीं जानता कि हमें इस धर्म में रहना चाहिए। मानव बनने तक विष्णुशक्ति ने इस संसार में स्वयं अवतार लिए। आपको यह मालूम है परमेश्वर के अवतरण हुए हैं। सर्वप्रथम आप मछली थे। उस समय मछली रूप में हुआ। बाद में कूर्म (कछुआ) रूप से हुआ है। कछुए के बाद वराह (सूअर) रूप से हुआ है। मतलब हर-एक जगह आपको ये दिखायी दिया जैसे-जैसे मनुष्य की उन्नति होती गयी वैसे-वैसे परमेश्वर ने स्वयं इस संसार में जन्म लिया और आपका मार्गदर्शन किया। क्योंकि उनके बगैर आपका कौन मार्गदर्शन करेगा ? और केवल विष्णुशक्ति ही अवतार लेती है। बाकी कोई शक्ति अवतरित नहीं होती। उसका कारण है अवतार की जरूरत उत्क्रान्ति के लिए होती है। उत्क्रान्ति का कार्य विष्णुशक्ति से होता है। इसलिए केवल विष्णुशक्ति ही अवतार लेती है। जिसे हम सहजयोग में महाकाली शक्ति या शिवशक्ति कहते हैं, वह भी कभी-कभी अवतरित होती है। जब-जब भक्तों पर विपत्ति आई तब-तब देवी ने संसार में आकर अपनी छत्र छाया से भक्तों को संरक्षण दिया। तब वे भी अवतार लेती हैं। परन्तु मुख्य अवतरण जो उत्क्रांती में मदद देते हैं वह हैं विष्णुशक्ति के।

अब विष्णुशक्ति का पूर्ण प्रादुर्भावयुक्त अवतरण श्रीकृष्ण का है। इसलिए उसे सम्पूर्ण अवतरण कहते हैं। इतना ही नहीं वे विराट हैं। समझ लीजिए अगर ये विश्व विराट है तो आप उनकी एक पेशी हैं। ये जो पेशियाँ हैं वे जागृत होनी

चाहिए और उन्हें मालूम होना चाहिए कि उस सम्पूर्ण का वे एक हिस्सा हैं, अवयव हैं और इस लिए आज हम यहाँ सहजयोग प्रदान कर रहे हैं।

अब मनुष्य विशुद्धि चक्र तक आया। यह चक्र श्री कृष्ण का है। माने इसमें सबसे अधिक सोलह पंखुड़ियाँ हैं व सोलह हजार नाड़ियाँ हैं। श्री कृष्ण स्थिति तक आने के बाद मनुष्य ने अपना सर ऊपर उठाया। उसमें से मानव प्राणी बन गया। उसकी विशेषता है कि उसमें 'मैं'—पन 'अहं' भाव आया। 'मैं' अमुक हूँ। ये जो उसमें प्रत्येक घटक अलग होने का भाव है। उस प्रत्येक घटक को जो परमात्मा ने अलग किया वह एक विशेष क्रिया से घटित होता है। अपने में 'अहंकार' व 'प्रति-अहंकार' ये दोनों बढ़कर ब्रह्मरंध्र के पास जो जगह है यहां आकर मिलते हैं। तब वे एक के ऊपर एक जमा हो जाते हैं। तब वहां स्वस्तिक संतुलन (balance) होता है। जमा होने पर तालू (ब्रह्मरन्ध्र) भर जाती है। ब्रह्मरंध्र का रंध्र अर्थात छिद्र भर जाता है। तालू भरने के बाद आप सब अलग-अलग हो जाते हैं तब आप मानव बन जाते हैं। इस तरह से आप 'अ' 'ब' 'क' 'ड' ये सब तैयार हो जाते हैं। ये सब अपने आपको अलग-अलग समझते हैं। हम निराले—तुम निराले, वे निराले। परन्तु सचमुच आप अलग-अलग नहीं हैं। आपमें एक ही शक्ति है। परन्तु उस (बोध, चेतना) को प्राप्त हुए बगैर आपके दिमाग में ये बात कैसे आएगी? इसलिए परमेश्वर ने आपको पहले अलग-अलग बनाया है।

मनुष्य को परमेश्वर ने स्वतन्त्रता दी है। आपको (मानव को अन्य प्राणियों से) भिन्न बनाया है। अब आप थोड़ा स्वयं सीखें। स्वयं सीखने पर आप जान सकोगे कि आप उस सम्पूर्ण के एक अवयव हैं, घटक हैं। ये जो एक घटक है वह जब जागृत होकर उस सम्पूर्ण से एकाकार होगा तभी उसे (उस घटक को) अपना पूर्णत्व प्राप्त होगा। उन्होंने मनुष्य के लिए ये धर्म बनाया है। ये कार्य होने के लिए यह कुण्डलिनी—ये शक्ति जो शिव-शक्ति है, वह स्वयं ब्रह्मरंध्र को छेदकर ऊपर आती है। उस समय साक्षात्कार घटित होता है। इसके लिये कोई भी दूसरा मार्ग नहीं है। किसी ने कहा एक ही मार्ग कैसे? एक ही रास्ता है? पेड़ में अंकुर आना ये एक ही मार्ग है। वैसे ही कुण्डलिनी जागृत होना ये एक ही मार्ग है। अब और धर्मों में इसके बारे में बताया गया है कि नहीं? इसके बारे में बहुत वाद-विवाद होता है। आपने क्रिश्चियन धर्म देखा तो उसमें हर तरह से कुण्डलिनी का वर्णन किया है। श्री क्राइस्ट ने कहा है कि, मैं दरवाजा हूँ, मैं ही मार्ग हूँ। श्री क्राइस्ट स्वयं कुण्डलिनी का दरवाजा व रास्ता हैं। परन्तु उन्होंने कुण्डलिनी—इस शब्द का प्रयोग नहीं किया। इसके बाद मुसलमान धर्म में कुण्डलिनी के बारे में कहा है कि नहीं? ये किसी ने सवाल किया तो मैं कहूँगी पूरा कुण्डलिनी तत्व है। नमाज माने दूसरा कुछ भी नहीं। कुण्डलिनी ऊपर कैसे उठानी है यही उसमें बताया है। पहले जब मोहम्मद साहिब थे तब उन्होंने बताया कि अपने दोनों हाथ फैलाकर घुटनों की सहायता से आप नमाज पढ़िए। तब लोग हंसते थे। ये किसलिए करना है? उनके (मोहम्मद साहब के अनुयायियों, मुसलमानों के) साथ आज भी हम कुण्डलिनी की बातें नहीं कर सकते। तो उस समय की तो बात ही दूसरी थी। स्वयं मोहम्मद साहब दत्तात्रेय के अवतरण थे। परन्तु दत्तात्रेय की स्थिति क्या थी वह देखने लायक थी। दत्तात्रेय के अवतरण मोहम्मद साहब को उसका सम्मान प्राप्त नहीं था। उन लोगों ने ये बात नहीं समझी। तो भी उन्होंने लोगों को बताया। आप मुसलमानों की तरह नमाज पढ़िए। नमाज के जितने भी प्रकार हैं वे सारे चक्रों को गति देने वाले हैं और कुण्डलिनी जागृत करने वाले हैं। तो ये जो दूसरी शक्ति है वह विष्णुशक्ति के रूप में आप में वास करती है। ये जो गुरु लोग हैं दत्तात्रेय जी का रूप हैं। उन्हें

महाराष्ट्र में हम लोग बहुत सम्मान देते हैं। ये सभी पेट में विराजित है। उनके तत्व जागृत होने चाहिए। बहुत से लोग दत्तात्रेय के भक्त हैं। पर सबके पेट खराब हैं। कैसी आश्चर्य की बात है? आप दत्तात्रेय के शिष्य हैं तो आपका पेट अति उत्तम होना चाहिए। आपका पेट ही खराब होगा। (कारण आपका गुरु तत्व जागृत नहीं है।) दत्तात्रेय की उपासना करने बैठे हैं। दत्तात्रेय कोई आपके घर के नौकर नहीं हैं। दत्तात्रेय क्या हैं ये हमें पता है। इसलिए हम उनका वर्णन भी नहीं कर सकते। और आप तो इतने बड़े तत्व को आह्वान करते हैं। उसके लिए आपकी तैयारी है क्या? और इसका आपको अधिकार है क्या? अनाधिकार चेष्टा करने वाले ये आजकल के तथाकथित गुरु भी इधर मक्कार (दम्भी) बैठे हैं। उन्हें जरा भी अधिकार नहीं कि वे दत्तात्रेय का नाम भी लें। ये सारे अनाधिकारी गुरु दुर्गति की ओर जाते हैं और आपको भी ले जाते हैं। और इसी तरह से आपने जो दत्तात्रेय का तत्व स्वयं अपने में जागृत करने का जो सोचा है उसमें बहुत दोष हैं और इसी दोष के कारण पेट में तकलीफ होती है।

अब सहजयोग से आपको पता लगेगा कि क्या दोष हैं। उसका एकत्व कैसे साधना है? किस तरह से अपने आप में दत्तात्रेय जागृत करते हैं? एक बार दत्तात्रेय जागृत होने पर धर्म अपने आप ही जागृत होता है। तब अधर्म करना ही बड़ा मुश्किल होता है। मुख्य बात ये है कि, इन गुरुओं ने क्या कहा है ये आप जान लो। पहली बात ये है कि मनुष्य को किसी भी नशे की आदत नहीं होनी चाहिए। कोई कहते हैं साईंनाथ (सिरडी वाले) चिलम पीते थे। उनकी तो बात ही अलग थी। परन्तु आपको कोई नशा नहीं करना है। कोई भी नशा हो, तम्बाकू हो, शराब हो, सभी गुरुतत्व के विरोध में हैं। शराब क्यों नहीं पीनी? उससे अपने धर्म को और गुरुतत्व को हानि पहुँचती है। फिर कट्टरता और धर्मान्धता भी अपने नाभि चक्र को हानिकारक होते हैं। अब हमारे यहां जो कट्टर लोग होंगे उनको खासकर पेट की तकलीफ होगी क्योंकि कट्टरता विष्णुतत्व को बहुत हानिकारक है। इतना ही नहीं, गुरुतत्व का भी इससे विनाश होता है। जिस मनुष्य में कट्टरता है, मतलब हम बहुत बड़े हैं हिन्दू, ब्राह्मण, क्रिश्चियन या मुसलमान ऐसे कट्टर कहलाने वाले लोग, सहजयोग नहीं कर सकते। आपको क्या मालूम आज तो आपने यहां जन्म लिया है कल मुसलमान धर्म में जन्म लेंगे या चायना में। किस बात से आप तय करते हैं आप यहीं (हिन्दू, मुसलमान आदि) सब कुछ हैं? हिन्दुस्तान में तो ये बात कह नहीं सकते क्योंकि यहां कहा गया है 'आपका पुनः जन्म होता है।' तो आप पूर्व जन्म में क्या थे, क्या मालूम? हो सकता है पूर्व जन्म में आप अंग्रेज हों। और यहां जो बड़े सन्त लोग हुए हैं वे अंग्रेज बनकर जन्मे हैं। और वहां के लोग आप यहां जन्मे हों।

आजकल के नेता लोगों को देखकर मुझे शक होने लगा है वे (अंग्रेज) यहां आकर जन्मे हैं? अब आपको समझना चाहिए कि जब हम धर्म के बारे में बातें करते हैं तब बाह्य धर्म से ज्यादा अन्दर के धर्म को ओर ध्यान देना चाहिए। उसके अनेक प्रमाण अपने यहां दिखाए हैं। विशेषतः हमारे अवतरणों ने दिखाए हैं। राम की ही बात देखिए। एक भील जाति की औरत, जिसके दांत टूटे हुए, बुढ़िया, नहाने से वंचित, दांत भी साफ नहीं, बिलकुल बूढ़ी औरत, उसने बेर तोड़े और मुंह में डालकर जूठे बनाए, आप खाओगे एक भी। अपने महाराष्ट्रियों को तो जूठे का बहुत ही ख्याल है! परन्तु राम ने वे अत्यन्त प्यार से खाए। सीताजी से कहा, "मैं आपको एक भी नहीं दूंगा सारे मैं ही खाऊंगा, मैंने ऐसे बेर कभी नहीं खाए हैं। मुझे ऐसा स्वाद भी कभी नहीं आया। तो मैं आपको कैसे दूं? तो वह भील औरत कहती है मेरे पास और भी रखे हैं पर वे दांत से तोड़े हुए हैं। फिर सीताजी को दिए। लक्ष्मण जी को गुस्सा आ

रहा था। ये क्या मामला है। उनके समझ में नहीं आ रहा था। सीताजी ने कहा ये सच बात है ऐसे बेर मैंने कभी नहीं खाए। थोड़े और तो हमें दीजिए और हमारे देवर जी को भी दीजिए। फिर दौड़कर लक्ष्मण जी ने वे बेर लिए। इस तरह का सुन्दर वर्णन है।

विदुर के घर जाकर श्री कृष्ण जी ने खाना खाया। उन्होंने स्वयं ग्वालों की जाति में जन्म लिया। हम कोई बहुत बड़े हैं (यह धर्मान्धता) माने आपको हिन्दू धर्म बिल्कुल ही समझ में नहीं आया। सभी मनुष्यों में एक ही आत्मा है और सब उसी की (चारों) ओर घूम रहे हैं। एक ही परमेश्वर सभी में रहता है। ये अनेकों बार कहा तब भी हमने जात-पांत बनाकर रखी है। जात-पांत मनुष्य के 'स्वभाव' के कारण (अनुसार) होती है। प्रत्येक का 'स्वभाव' अलग-अलग होता है। ये बहुत ही गहरी बात है। 'स्व' भाव उस 'स्व' को अभी जाना नहीं। आप किस आधार पर जाति बनाते हो? इस तरह से हमारा ये विष्णुतत्व खराब होता है। मतलब पहले से ये कल्पनाएं बनाकर रखना—ये ठीक नहीं, वह ठीक नहीं। आपको कैसे पता चला? ये आप कैसे पहचानोगे?

इसके लिए पहले आपका विष्णुतत्व जागृत होना चाहिए। वह आपके नाभि चक्र में है। नाभि चक्र का विष्णुतत्व जागृत हुआ तो उसके आगे स्वाधिष्ठान चक्रों के बारे में मैंने कहा है कि, ये क्रियाशक्ति स्वाधिष्ठान चक्र से कार्यान्वित है। जिन लोगों को अत्यधिक कर्म करने की आदत है उन लोगों को स्वाधिष्ठान चक्र की बहुत तकलीफ होती है क्योंकि सारी शक्ति विष्णुतत्व से स्वाधिष्ठान चक्र में खिचती है। जो अति कर्मी मनुष्य होता है उसे समय ही नहीं मिलता कि मेरी उत्क्रान्ति होनी चाहिए और मेरा विशेष कोई अर्थ निकालना चाहिए। उसका उन्हें विचार ही नहीं आता। पूरे समय वे परमेश्वर द्वारा दी हुई अपनी शक्ति खींचते रहते हैं। और इसलिए आपने देखा होगा ऐसे लोगों को हमेशा कुछ न कुछ बीमारी रहती है।

अब ये शक्ति विष्णुशक्ति और शिवशक्ति है। इस विष्णुशक्ति से ही ये चक्र बने हैं। स्वाधिष्ठान चक्र भी विष्णुशक्ति से निकला हुआ है। जब इन छह चक्रों को छेदकर कुण्डलिनी ऊपर जाती है तब वह सम्पूर्ण शुद्ध विद्या कही जाती है। जो शुद्धतत्व है वह परमेश्वर की इच्छा से उन चक्रों को छेदकर जाते समय उनको जागृत करके जाता है। मतलब यह कि आपमें बैठे हुए जो सुप्त देवता हैं वे जागृत हो जाते हैं। वे जागृत होते ही उनके (गुण विषयक) लाभ हमें मिलने लगते हैं।

लक्ष्मीतत्व जागृत होते ही आपको मालूम है लक्ष्मी का क्या काम है। लक्ष्मी माने अति अमीर मनुष्य नहीं, बहुत पैसे वाला नहीं। लक्ष्मी का मतलब है एक हाथ से दान, एक हाथ से आश्रय और अन्य दो हाथों में कमल जो कंजूस और कटू मनुष्य है उसमें लक्ष्मीतत्व बिल्कुल नहीं है। जो मनुष्य कमल की तरह अत्यन्त प्रेममय अर्थात् जिसके घर में कोई भी जाए, यहाँ तक कि भौरे जैसा काँटे वाला भी उसके घर जाए, तो उसे वह संरक्षण दे ऐसा जो करता है वही हमारे यहाँ लक्ष्मीपति माना जाता है। पर इस तरह के लक्ष्मीपति हमारे यहां कितने हैं? नहीं के बराबर ही हैं। परन्तु आप उसे लक्ष्मीपति कहते हैं जो पैसे वाले हैं जिनके पास इतने पैसे हैं कि गधे पर लादें। उन लोगों को कभी भी धर्म नहीं मिलता। श्री क्राइस्ट ने कहा है, जिन लोगों के पास अति पैसा है वे कभी भी प्रभू के साम्राज्य में नहीं आ सकते। किसी ऊंट को सुई की छेद में डाला तो वह जा सकेगा लेकिन ऐसा मनुष्य (पैसे वाला मनुष्य) सहजयोग में नहीं आ सकेगा। इसका कारण है कि ऐसे मनुष्य को सभी जगह पैसा ही पैसा नजर

आता है। और कुछ भी नहीं दिखाई देता। न तो अपने माँ-बाप, न भाई-बहन, न पत्नी, कुछ भी नहीं दिखाई देता। केवल मैं कितना बड़ा और मेरे पास कितना पैसा। फिर वह पैसा खत्म होते ही उसे मालूम होता है वह मनुष्य कहाँ गया है। बहुत पैसा होने से भी आपको मालूम है मनुष्य को नखरे सूजते हैं, वह कहां खर्च करे। पैसा बस थोड़ा बहुत हो, जिससे समाधान मिले ऐसी विष्णुशक्ति अगर अपने में जागृत हो गयी तो ही मनुष्य की उन्नति हो सकती है। मतलब उसका चित्त पैसों के बजाय समाधान पर आने से वह उन्नति मार्ग पर आने लगता है। अगर समाधान ही पैसों से नहीं आया (तो उसका तो उल्टा परिणाम निकलता है।), मतलब एक मकान बनाना है तो बनाया, मकान बनाने के बाद लगा अब मोटर खरीद ले, मोटर के बाद लगेगा एक बिल्डिंग बना ले, कुछ ना कुछ हमेशा चलता ही रहेगा। मतलब कभी भी हमें सन्तोष नहीं मिलेगा। ये जड़त्व स्थूल है। उससे मनुष्य को कभी सन्तोष मिलने वाला नहीं। ये जड़ वस्तु है जड़ वस्तु से हमेशा जड़ता आती है। जड़ता से समाधान नहीं आएगा। मानिए किसी को कुर्सी की आदत हो गयी तो वह जमीन पर नहीं बैठ सकता। माने कुर्सी उसे चिपक गयी। मतलब जड़ता जो है वह मनुष्य को आदतें डालती है। किसी भी जड़ वस्तु की मनुष्य को आदत जब लग जाती है वह धीरे-धीरे उसी में लीन होने लगता है। और उसका जो कुछ सत्व है वह नष्ट हो जाता है।

किसी भी जड़ वस्तु से मनुष्य में समाधान नहीं आ सकता। केवल परमेश्वरी तत्व से समाधान आ सकता है। जब तक आपका आत्मा आपसे प्लावित नहीं होता, प्रस्फुटित नहीं होता, स्तंभित नहीं होता तब तक आपको कभी भी सन्तोष नहीं मिल सकता। आप चाहे जितने भी पैसे कमाओ, चाहे जिस सत्ता पर जाकर बैठो, परन्तु तब भी आप का मुंह लटका हुआ ही रहेगा। परन्तु ऐसा एक मनुष्य जिसके पास कुछ भी न होते हुए भी मौज-मस्ती में रहता है, बादशाह होता है। ऐसे मनुष्य को देखकर आपको लगेगा कि ये जो शक्ति है वह उसमें तृप्त है। अब कुछ आगे की सोचना चाहिए, कुछ और दूसरा होना चाहिए। अब तक जो सन्तोष हुआ, खूब हुआ। अब और कुछ नहीं चाहिए। जो प्रपंच (ग्रहस्थ धर्म) हुए बहुत हुए। इसके आगे क्या है? तब मनुष्य धार्मिकता की ओर जागृत (अग्रसर) होता है। फिर उसमें भी मनुष्य का दिमाग चलता है। पहले एक ब्राह्मण को बुलाएंगे। मैं तुम्हें पैसे देता हूँ, तुम पूजा करो। नहीं तो किसी मन्दिर के लिए सौ पांच सौ रुपया चंदा दे देगा। वाह! वाह! हमने चंदा दिया। नहीं तो एक मन्दिर ही बनाएंगे। इस (अपनी आत्मा के) मन्दिर का क्या होने वाला है? यहां है कि नहीं भगवान अपने आपमें? यहां के भगवान आपने जागृत किए कि नहीं।

आपमें ही बैठा हुआ आत्मा है। आपमें ही परमात्मा है। आप उसी को क्यों नहीं जागृत करते? कारण ये है कि मनुष्य को अपने आपको देखना बड़ा कठिन लगता है। वह अपने आपको नहीं देख सकता। उसके लिए कुण्डलिनी की व्यवस्था है। ये कुण्डलिनी एकदम उठती है, ऊपर आती है। क्यों? सबके सब देवता जागृत होते हैं। अब बहुतों को लगता है कुण्डलिनी जाग्रण माने बहुत बड़ा भारी काम है। पर वैसा कुछ नहीं है। आपने कल देखा कितना आसान काम है। कल कितने लोगों को पार किया? कल कितने लोगों को ठंडी लहरें आयीं? ये अत्यन्त आसान काम है। परन्तु ये जो कर सकता है उसी को आता है। जिसे नहीं आता है उसे इसमें नहीं पड़ना चाहिए। अनाधिकार चेष्टा नहीं करनी चाहिए। जिसे इसका अधिकार है उसके लिए ये पूरी लीला है। जो कुछ महत्वपूर्ण है जैसे श्वास-प्रश्वास, रक्त संचालन) वह सब आसान होना चाहिए। तो अब ये जो शिवशक्ति आप में बांयी तरफ है वही सदाशिव है व आपमें यहां (हृदय चक्र) पर विराजित है। क्योंकि, उनमें

आत्मा और शक्ति दोनों हैं। उस स्थिति में जब कुण्डलिनी ब्रह्मरन्ध्र को छेदती है तब वह प्रकाश सभी ओर फैलता है और आप एक नयी अवस्था में पहुँच जाते हैं। एक नये आयाम में उतर आते हैं। आपकी चेतना को एक नया रूप मिलता है। मतलब आपकी चेतना में प्रज्ज्वलितता आती है। इसमें 'प्र' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'प्र' माने जो प्रकाशित है वह। अन्दर एक दीप है, पर वह जला हुआ नहीं है। उसका कोई मतलब (सार्थकता) नहीं है। वह जलाने से ही प्रज्ज्वलित होता है। वैसे ही आपका चित्त है, वह तब प्रज्ज्वलित होता है, उससे प्रकाश फैलता है और उस प्रकाश में सब कुछ दिखाई देता है। अब आपको कुछ नहीं दीख रहा है। अलख है, अपरोक्ष है ऐसा कुछ लोग बोलते हैं। और उसी के कारण कुछ नहीं समझ आता कि इसका क्या उपाय है? उपाय है। आपमें प्रकाश है। आपको आत्म-साक्षात्कार होना चाहिए। बगैर आत्मसाक्षात्कार के आपकी अविद्या नहीं जाएगी। और ये घटित होना बहुत जरूरी है। वह परमेश्वर का कार्य है। उन्हें ये कार्य करना ही है। उन्होंने इस संसार का सुन्दर सपना रचा है और उनकी ये रचना फलीभूत नहीं हुई तो परमेश्वर का कोई अर्थ (महिमा) नहीं रहेगा। तो उन्हें ये कार्य करना ही है और वह कैसे करना है ये उन्हें मालूम है।

बहुत से लोग कहते हैं, माताजी, हम शिव के भक्त हैं। फिर भी उन्हें हृदय की शिकायत! बिलकुल सच बात है, (बिना कुण्डलिनी जागरण) शिव के भक्त माने निश्चित हृदय विकार! अनाधिकार चेष्टा करने से शिवशक्ति जो है वह क्रोधित होगी। वह शिवशक्ति आपके अस्तित्व का कारण है। (अनाधिकार चेष्टा करने से) आपका अस्तित्व ही नष्ट होगा। इसलिए आपको हृदय की तकलीफ होती है। परन्तु उसका इलाज है। तो क्या करना चाहिए? क्षमा मांगनी चाहिए। शिवजी से आपको क्षमा मांगनी चाहिए। शिव से कहना चाहिए, हमारी गलती हो गयी। आप करुणासागर हो, दयासागर हो। आप हमें माफ कर दीजिए। अब हम ठीक से चलेंगे।

यहाँ से वहाँ इस महाराष्ट्र में इतने गुरु हैं। उनमें ज्यादा से ज्यादा दो-चार सच्चे गुरू हैं। बाकी सब ठग हैं। और भयंकर कि उनके फोटो घर में रखे हैं। अब मैं कहती हूँ अब कलियुग खत्म हो गया है और सत्ययुग की शुरूआत हुई है। उन गुरुओं की वजह से आपको कैन्सर, ल्युकेमिया, कैन्सर की बीमारियाँ होंगी, और सहजयोग के बगैर वह ठीक नहीं होंगी। इसलिए आप ध्यान रखिए अगर आपने इन गुरुओं की और गन्दे लोगों की सेवा की तो उसके परिणाम भुगतने पड़ेंगे। ये एक मां के प्यार से व अत्यन्त करुणा से कह रही हूँ।

सहजयोग से आपमें प्रकाश आएगा। इस प्रकाश से आप जानोगे बाहर कितने गन्दे काम हो रहे हैं। ये झूठापन कितना पक्का हो गया है। इस धर्मान्धता से और इस तरह के मन्दिरों में जाकर और इधर-उधर जाकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे है। कुछ तो मार्ग दिखाइए, प्रकाश दीजिए। ये मनुष्य का शरीर आपका पता नहीं परमात्मा ने कितनी मेहनत से बनाया है। कितनी योनियों से निकालकर आपको इस स्थिति में लाया है। इस स्वतन्त्रता का हमें प्रयोग करना चाहिए। हम कौन है? परमेश्वर ने हमें किस स्थिति से यहां (इस स्थिति में) लाया है? कितने प्यार से, कितना पालन-पोषण करके आज हमारी उन्होंने इतनी सुन्दर स्थिति बनायी है। इस इतने सुन्दर बने हुए मनुष्य देह को, अपने मन को और इस पूरे मानव व्यक्तित्व को कौन सी स्थिति में लाया है, कहां बिठाया है, इसका विचार करिए। अपनी मान्यता (मैं कौन हूँ) होनी चाहिए। एक बाना

(सैनिक पोषाक) होना चाहिए मनुष्य में समझदारी का कि, हम कौन हैं ? कहां जाएंगे ? हमें क्या चाहिए ? तो आप आइए और अपना कल्याण करवा लीजिए। उन गुरुओं के पीछे बेकार में अपने आपको मत परेशान करिए। और 'स्व' को प्राप्त होने के बाद उन गुरुओं से कैसे छुटकारा पाना है ये सीख लीजिए। उनसे बहस करने और लड़ने मत जाइए। वह आपके बस का नहीं है। यह आपसे नहीं होगा। ये बात सत्य है आप कितने भी बलशाली हों पर फिर भी वे लोग अत्यन्त दुष्ट होते हैं और उनमें इतनी गंदी विद्याएं होती हैं और वे इतने पतित होते हैं (कि आप उनसे लड़ नहीं सकते) तो मुझे बारम्बार कहना है कि ऐसे लोगों के पीछे आप गए भी हों तो उन्हें सहजता में छोड़ देना चाहिए। अगर आपने उन्हें सहज में छोड़ दिया तो उससे बहुत लाभ होने वाले हैं। कभी-कभी इन गुरुओं के प्रकार देखकर मुझे इतना दुःख, इतना क्रोध आता है कि कभी-कभी लगता है अगर संहार-शक्ति प्रयोग की तो इनका सहज संहार परमेश्वर कर सकते हैं। पर संहार करके भी क्या करें ? क्योंकि, कलियुग वाली स्थिति हो गयी है। "यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत" हुआ है। परन्तु इस दुनिया में ऐसे कौन से साधु हैं ? परित्राणाय साधुनां विनाशायात् दुष्कृताम्। दुष्कृत्यों का मुख्य है साधु में इसलिए पहले इनके दिमाग में घुसे हुए दुष्कृत्य निकालने पड़ेंगे। तभी उनको पार कर सकते हैं। अत्यन्त नाजुक स्थिति है। मुझे दीख रहा है कि आपके मस्तिष्क में वे घुसे हैं। तो इन्हें निकालना चाहिए, वे (मस्तिष्क) स्वच्छ करने चाहिएं। वे ठीक से निकालकर आपको आपकी जगह बिठाना है। और आपकी जो संपदा है वह आपमें बिठानी है।

आपको ये साक्षात्कार की दुनिया (परमात्मा का साम्राज्य) की पहचान बहुत दिनों से नहीं हो रही हैं क्योंकि 'निः' शब्द का मतलब जानकर आप उसका अनुसरण नहीं कर रहे हैं। समझ लीजिए आप इस शब्द के मतलब को तरह आचरण नहीं कर पा रहे हैं, मतलब आप कभी भावुक और कभी घमण्डी बन रहे हो, परन्तु आपको इसका अत्यंत दुःख हो रहा है। तब आप इस दुनिया की अतिशय स्थित पर उतारू हो। मतलब न आप इस दुनिया में हैं और न उस मिथ्या दुनिया में हैं। परमात्मा की इस दुनिया में केवल आप ध्यान धारण द्वारा ही अपने आपको ले जा सकोगे। केवल 'निः' शब्द का आपको अपने जीवन में अनुसरण करना है, फिर आप निर्विचार बन सकते हैं।

—श्री माताजी

❀ ❀ ❀

मैं कभी भी घड़ी नहीं देखती। मेरी असली घड़ी तो निर्विचारिता में है। वह हमेशा के लिए रुकी हुई है। जिस समय जो बात करनी है और करनी चाहिए बिल्कुल उसी समय वह हो जाती है।

—श्री माताजी

श्री गणपत्यथर्व शीर्षम्

हमारे कान जो सत्य है उसी को सुनें।
हमारे नयन जो शुद्ध है उसी को देखें।
हमारा तन-मन-धन ईश्वर की स्तुति में लगा रहे—

श्रवण करने वाले इससे ईश्वरी ज्ञान को प्राप्त करें, ना मेरी आवाज सुनें। इसी प्रार्थना से, इसी ज्ञान से, इसी प्रेरणा से परम् परमेश्वरी माता जी का पूजन करें। हमारा ध्यान प्रकाशित और समृद्ध हो तथा सभी सहजयोगी बांधव करुणामय एवं निरामय आनंद का लाभ उठाएं।

प्रार्थना—

"त्वमेव साक्षात् श्री गणेश साक्षात् श्री जीसस साक्षात् श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।"

ॐ नमस्ते गणपतये।
त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि।
त्वमेव केवलं कर्ताऽसि।
त्वमेव केवलं धर्ताऽसि।
त्वमेव केवलं हर्ताऽसि।
त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि।
त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम् ॥१॥

आप ही साक्षात् तत्व हैं।
आप ही साक्षात् सभी क्रियाओं के कर्त्ता हैं।
जो घटित हुए हैं, होते हैं, तथा होंगे।
आप ही साक्षात् हैं जो सभी आधारितों (supported) को धारण (support) करते हैं।

आप ही साक्षात् हैं जो सभी रक्षितों की रक्षा करते हैं।
आप ही साक्षात् सर्वत्र निरंतर प्रतीत होने वाले आत्मा हैं।

ऋतं वच्मि, सत्यं वच्मि ॥२॥

मेरी वाचा विशुद्ध एवम् पवित्र तत्व का उच्चारण करे।

अव त्वं माम् ।
अव वक्तारम्, अव श्रोतारम् ।
अव दातारम्, अव धातारम् ।
अवानूचानमव शिष्यम् ।
अव पश्चात्तात्, अव पुरस्तात् ।
अवोत्तरात्तात्, अव दक्षिणात्तात् ।
अव चोर्ध्वात्तात्, अवाधरात्तात् ।
सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् ॥३॥

आप मेरी और हम सब को, जो इस स्तुति का गायन कर रहे हैं, जो सुन रहे हैं, जो इसे दूसरे को प्रदान करते हैं एवम् जो इसे स्वीकार करते हैं और इससे संलग्न रहते हैं, उनको पूर्व दिशा से, पश्चिम दिशा से, उत्तर दिशा से, दक्षिण दिशा से तथा ऊपर एवम् नीचे से, सभी दिशाओं से सर्वत्र रक्षा करें।

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः ।
त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः ।
त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि ।
त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ।
त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ॥४॥

शब्दों से प्रतीत होने वाला ईश्वर तत्व आप का स्वरूप है।
विशुद्ध चित्त जिससे ईश्वर का ज्ञान होता है वह आपका स्वरूप है।
विशुद्ध आनंद जो ईश्वर से प्राप्त होता है वह आपका स्वरूप है।
आप ब्रह्ममय हैं।
आप संपूर्ण अद्वितीय सच्चिदानंद स्वरूप हैं।

आप साक्षात् ब्रह्म हैं।
विशुद्ध ज्ञान आप का स्वरूप है।

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते।
सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति।
सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति।
सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति।
त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः।
त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥५॥

यह संपूर्ण जगत् आप के कारण निर्माण होता है।
यह संपूर्ण जगत् आप के कारण स्थित है।
यह संपूर्ण जगत् आप के कारण प्रतीत होता है।

यह संपूर्ण जगत् का विलय आप में होता है। और उसके पश्चात केवल आप ही साक्षीस्वरूप रहते हैं।

आप पृथ्वी हैं, आप जल हैं, आप वायु हैं, आप अग्नि हैं, आप आकाश हैं।
परा, पश्यंति, मध्यमा, वैखरी आप का स्वरूप है।

त्वं गुणत्रयातीतः।
त्वं देहत्रयातीतः।
त्वं कालत्रयातीतः।
त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्।
त्वं शक्तित्रयात्मकः।
त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्।
त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं
रुद्रस्त्वं इंद्रस्त्वं अग्निस्त्वं
वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं
ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥६॥

आप सत्व, रज, तम तीनों गुणों के परे हैं।
आप स्थूल-सूक्ष्म तथा कारण तीनों देहों (शरीरों) के परे हैं।

आप वर्तमान, भूत, भविष्य तीनों कालों के परे हैं।

आप निरंतर मूलाधार चक्र में स्थित हैं।

महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली शक्तियाँ आप में कार्यान्वित हैं।

जो ईश्वर से तादात्म्य पाते हैं वे योगी आपका ध्यान करते हैं।

आप ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र हैं।

आप इन्द्र, अग्नि, वायु हैं।

आप मध्याह्न काल के सूर्य एवं पूर्णमासी के चन्द्रमा हैं।

इन सबके द्वारा ओंकारस्वरूप आप भू-लोक, वायु-मंडल, आकाश में भरे हैं, तथा उनके भी परे हैं।

गणादिं पूर्वमुच्चार्य, वर्णादिं तदनन्तरम्।
अनुस्वारः परतरः।
अर्धेन्दुलसितम्, तारेण ऋद्धम्।
एतत्तव मनुस्वरूपम्।
गकारः पूर्वरूपम्, अकारो मध्यरूपम्।
अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्।
बिन्दुरुत्तररूपम्।
नादः सन्धानम्, संहिता सन्धिः।
सैषा गणेशविद्या।
गणक ऋषिः, निचृद्गायत्रीच्छन्दः।
गणपतिर्देवता।
ॐ गँ गणपतये नमः ॥७॥

गणों में प्रथम जो आप हैं उनका उच्चारण करके तत्पश्चात वर्णमाला का उच्चारण करते हैं। अर्ध-चन्द्रमा धारण किए हुए आप सभी अक्षरों के परे हैं। आप तारे और चन्द्रमा के भी परे हैं।

'ग' प्रथम रूप 'अ' मध्यम रूप और अनुस्वार अंतिम रूप तथा बिन्दु उत्तर रूप, इनका अनुसंधान वेदों का ज्ञान देने वाला है। यही गणेश विद्या है। इनके ऋषि गणक हैं तथा छंद गायत्री हैं। और देवता गणपति हैं।

ॐ गं गणपतये नमः।

एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो दंती प्रचोदयात् ॥८॥

हम एक दंत (श्री गणेश) को जानें। वक्रतुंड (जो दुष्टों का नाश करता है) का ध्यान करें। वह दंती (श्री गणेश) हमें प्रेरणा दें।

एकदन्तं चतुर्हस्तं
पाशमंकुशधारिणम् ।
रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं
मूषकध्वजम् ॥
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् ।
रक्तगन्धानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् ॥
भक्तानुकम्पिनं देवं
जगत्कारणमच्युतम् ।
आविर्भूतं च सृष्टयादौ
प्रकृतेः पुरुषात्परम् ॥
एवं ध्यायति यो नित्यं
स योगी योगिनां वरः ॥९॥

एक दंत जिनके चार हाथ हैं, जिन्होंने पाश, अंकुश और शक्ति को धारण किया है और अभय प्रदान किया है, मूषक जिनका वाहन है।

आप के वस्त्र लाल हैं, आप लाल रंग से सुशोभित किए जाते हैं। लाल रंग का गंध आप को लगाया जाता है। आप की पूजा में लाल रंग के फूल अर्पण किए जाते हैं।

अपने भक्तों के प्रति आप को असीम प्रेम है, आप सारे विश्व के रचयिता हैं।

विश्व का प्रारंभ, विश्व का निर्माण होने से पहले आप थे।

आप प्रकृति व पुरुष इनके भी परे हैं।

इस प्रकार आप का ध्यान करने वाला योगी सभी योगियों में श्रेष्ठ है।

नमो व्रातपतये ।
नमो गणपतये ।
नमः प्रमथपतये ।
नमस्तेऽस्तु लंबोदरायैकदन्ताय ।
विघ्ननाशिने शिवसुताय ।
श्रीवरदमूर्तये नमो नमः ॥१०॥

ॐ नमो निर्मला जी सहाय नमो नमः ।
ॐ जीसस आप की शक्ति को हम सभी शरण हैं ।
हमारी स्मृति एवं क्रियाशीलता आपको अर्पित है ।
आप उन्हें प्रकाशित करें ।
आप ही वह शब्द हैं जो सबसे पहले था ।
आप ही वह शब्द हैं जो सबके अंत होने के बाद भी रहेगा ।
श्री गणेश आप को बारंबार प्रणाम ।
श्री शिवजी के गणों के नेता श्री गणेश आप को प्रणाम ।
वासनाओं पर नियंत्रण करने की शक्ति देने वाले गणेश आप को प्रणाम ।
लंबोदर गणेश आप को प्रणाम ।
एकदंत श्री गणेश आप को प्रणाम ।
विघ्नों का विनाश करने वाले गणेश आप को प्रणाम ।
आदिशक्ति माताजी निर्मला देवी के प्रिय पुत्र श्री गणेश आप को प्रणाम ।
आदिशक्ति माताजी को प्रसन्न रखने वाले श्री गणेश आप को प्रणाम ।

(चतुर्थ कवर पृष्ठ का शेष)

हे माँ ! तेरी भव्यता से
भक्ति-भाव भर जाते हैं ।
पद कमल स्पर्श करने बरबस,
मस्तक हमारे झुक जाते हैं ॥१३॥

सम्पूर्ण मूक समर्पण,
शब्द न मुख से आते हैं ।
करुणा-सागर के सामने,
सजल नयन हो जाते हैं ॥१४॥

आनंदातिरेक से गद्‌गद् हृदय,
वाणी ने मौन धरा है ।
मन मुग्ध हुआ देख रहा,
तन में चैतन्य भरा है ॥१५॥

सुध-बुध खो कर मन,
मुक्त विचार हो जाता है ।
तल्लीन तेरे चरणों पर,
सत्‌चिदानंद से भर जाता है ॥१६॥

तेरे बालक बन कर जिसने,
परम सौभाग्य पाया है ।
'निर्मला विद्या' के प्रकाश में,
'मरम' सहजयोग का पाया है ॥१७॥

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36999/81

ॐ

卐 जय श्री माताजी 卐

माता निर्मला महिमा

विराट की शक्ति, वीरांगना,
अखिल ब्रह्मांड की स्वामिनी हो ।
प्रभु की परम प्रकृति आदिशक्ति,
सब जग की तुम जननी हो ॥१॥

है असीम अखण्ड विस्तार तेरा,
अगाध तेरी गहराई है ।
समस्त लोकों भुवनों में,
सत्ता तेरी समाई है ॥२॥

तेरी शक्ति अनन्त अपार,
सकल सृष्टि रचाई है ।
ग्रह नक्षत्र तारों भरे नभ के नीचे,
हरी भरी धरती मनोहारी बनाई है ॥३॥

सब आधारों की आधार,
परम पवित्रता हो ।
नीले गगन की गहराइयों की,
तुम नीरवता हो ॥४॥

तेरी आँखों में परम शान्ति का,
सागर समाया है ।
नक्षत्र-तारे खचित अंतरिक्ष में,
साम्राज्य नीरवता का छाया है ॥५॥

असंख्य तारों को गूंथने वाली,
हे माँ ! तुम आकाश गंगा हो ।
सब जग को तारने वाली,
तुम विश्व गंगा हो ॥६॥

सब रंगों की जननी शुभ्रता,
तुम धवला हो ।
मानव-चित् को निर्मल करने वाली,
माता निर्मला हो ॥७॥

गंभीरों की गंभीरता,
वीरों की वीरता हो ।
धीरों की धीरता तुम,
चंचल-चित् की स्थिरता हो ॥८॥

भक्ति-भावों की अभिव्यक्ति,
सबकी जीवनी शक्ति हो ।
सत्-चिदानंद दायिनी तुम,
जीवन्मुक्तों की मुक्ति हो ॥९॥

अमर ज्योति है प्रकाश तेरा,
अनन्त जीवन का प्राण है ।
तेरा प्रेम ही सत्य है,
परमानन्द तेरा ज्ञान है ॥१०॥

मानवी-चेतना की पराकाष्ठा,
जब ज्ञान तेरा आता है ।
तुझको जानने के बाद,
कुछ शेष नहीं रह जाता है ॥११॥

बहु-आयामी गति तेरी है,
उपमायें सब तुझसे पाते हैं ।
तुझमें उत्पन्न होते सब,
तुझमें ही समा जाते हैं ॥१२॥

(शेष तृतीय कवर पृष्ठ पर)

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and
Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
One Issue Rs. 8.00, Annual Subscription Rs. 40.00 ; Foreign [By Airmail £ 9 $ 16]